P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-9, ISSUE-2 November -2020

E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

लिंगानुपात असन्तुलन के सामाजिक – सांस्कृतिक आयाम

Socio-Cultural Dimensions of Sex Ratio Imbalance

Paper Submission: 16/11/2020, Date of Acceptance: 29/11/2020, Date of Publication: 30/11/2020

अरूण कुमार उपाध्याय
प्रोफेसर और प्रमुख
समाजशास्त्र विभाग
राजकीय एम.जे.एस पीजी
कॉलेज, भिंड, मध्य प्रदेश,
भारत

सारांश

मानव समाज के सन्तुलन, संगठन व विकास के लिये महिला पुरूष की संख्या में अनुपातिक सन्तुलन जीव वैज्ञानिक व समाज वैज्ञानिक दोनो दृष्टिकोण से आवश्यक है पर हमारे समाज में महिलाओं की उपेक्षा हमेशा होती रही है और उनका सही सीान समाज में नही मिल पाया । प्राय उन्हें दमित व शोषित किया गया जिस कारण लिंगानुपात असन्तुलन की स्थिति निर्मित हो गयी । इस सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध प्रपत्र में लिंगानुपात असन्तुलन के सामाजिक सांस्कृतिक पक्षों को विश्लेषित किया गया है । अध्ययन में देखा गया कि लिंगानुपात असन्तुलन का मुख्य कारण लिंग परीक्षण और कन्या भ्रूण हत्या है और यह कुकृत्य अधिकांशत सुशिक्षित, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और भौतिकवादी दृष्टिकोण वाले जादा करा रहे है । लडकियो की कमी होने से महिलाओं के विरूद्ध अपराध, यौन शोषण, महिला उत्पीडन और विवाह सम्बन्धी समस्याये निरन्तर बढ रही है। इससे बहुपति विवाह, बालात् विवाह और वेश्यावृत्ति जैसी समस्यायें पैदा हो रही है ।इन समस्याओं के समाधान हेतु यह आवश्यक है कि जनजागरण द्वारा समाज में जागरूकता पैदा किया जाये । महिला शिक्षा का विस्तार और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन दे कर लिंगानुपात असन्तुलन को कम किया जा सकता है ।

For the balance, organization and development of human society, a proportionate balance between the number of female men is necessary from both biologist and social scientist point of view, but in our society women have always been neglected and their rightful place could not be found in the society. Often they were repressed and exploited due to which the situation of sex ratio imbalance was created. The research form presented in this context analyzes the sociocultural aspects of sex ratio imbalance. The study found that sex determination and female feticide are the main causes of sex ratio imbalance, and this practice is mostly done by well educated, economically rich and materialistic outlook Crimes against women, sexual exploitation, harassment of women and marriage related problems are constantly increasing due to lack of girls. This is causing problems like polyandry, child marriage and prostitution. To solve these problems, it is necessary to create awareness in the society through public awareness. Sex ratio imbalance can be reduced by expanding female education and promoting self-reliance financially.

मुख्य शब्द : लिंगानुपात भ्रूण हत्या बहुपति विवाह बलात विवाह प्रजनन दर ।
Sex-Ratio Feticide Polygamy Marriage Forced Marriage Fertility Rate.

प्रस्तावना

किसी भी समाज में परिवर्तन का एक मुख्य आधार होता है – जनसंख्या । जनसंख्या का वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है । किसी भी योजना को बनाने और उसको कियान्वित करने के लिये इसका ज्ञान आवश्यक है । हमे सिर्फ यही नही मालूम होना चाहिये कि प्रजनन दर और मृत्यू दर क्या है बल्कि उसके सामाजिक– सांस्कृतिक आधारों का भी पता होना चाहिये । मानव समाज के संतुलन ,संगठन व विकास के लिये महिला– पुरूष संख्या में अनुपातिक संतुलन जीव वैज्ञानिक व समाज वैाज्ञानिक दोनो दृष्टिकोण से आवश्यक है, पर व्यवहारिक रूप से हमारे समाज की आधे भाग की उपेंक्षा होती रही है और उन्हे उनका सही स्थान नही मिल पाया । प्राय उन्हे दमित व शोषित किया गया जिस कारण लिंगानुपात असंतुलन की स्थिति निर्मित हो गयी । महिलाओ के विकास को प्रजनन दर और लिंगानुपात की दृष्टि से देखा जाना चाहिये, पर विभिन्न प्रकार के अध्ययनो से पता चलता है कि साक्षरता में वृद्धि ने प्रजनन दर को कम किया, पर पितृसत्तात्मक पक्षपात की मनोवृत्ति व सांस्कृतिक व्यवस्था

अभी भी महिलाओं के विरूद्ध है जिसका स्पष्ट परिणाम लिंगानुपात ह्रास के रूप में देखा जा सकता है। वर्ष (1901) में जहां प्रति हजार पुरूषो पर महिलाओं की संख्या 972 थी वही (2011) में घट कर 940 हो गयी। यह ह्रास मुख्यत दो क्षेत्रो में देखने को मिलता है– नगरीय क्षेत्र और उच्च आय समूह । वे प्रदेश जो तुलनात्मक रूप से बेहतर स्थिति में हैं, जैसे पंजाब हरियाणा, गुजरात, चण्डीगढ, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली में पुरूषो की तुलना में महिलाओं की संख्या कम है ,वही दुसरी ओर गरीब राज्यों यथा अरूणंचल प्रदेश, मणिपुर, मेधालय ,मिजोरम, व आन्ध्रप्रेदेश में तुलनात्मक रूप से बेहतर स्थिति में है । प्रत्येक राज्य के ग्रामीण व जनजातीय क्षेत्रो में यह समस्या उतनी गम्भीर नही है जितना नगरीय क्षेत्रो में है । चुकी भारतीय सामाजिक व्यवस्था अभी भी पितृसत्तात्मक है जो आज भी महिला की प्रस्थिति का निर्धारण पुत्र जन्म के आधार पर करती है तब स्थिति और भी गम्भीर हो जाती है जब पुत्र को प्राथमिकता देने की परम्परा को छोटे परिवार की संकल्पना के साथ जोड दिया जाता है। इसका निश्चित परिणाम कन्या भ्रूण हत्या के रूप मे हमारे सामने आता है।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा

भारत में घटते लिंगानुपात की प्रवृत्ति के सम्बन्ध में विभिन्न शोधार्थियो द्वारा समय समय पर खोज परक प्रयास किये जाते रहे है । इन विभिन्न शोधार्थियो ने विभिन्न दृष्टिकोण एवं आधार को लेकर इस आयाम के अध्ययन कार्य को सम्पादित किया । के एन दास एवं पी सी महालनोविस ;1939द्ध, मालनीकारकर एवं सूलमा चोगले ;1976द्ध के वी रामचन्द्रन व व्ही ए देश पाण्डे ;1964द्ध ने विभिन्न क्षेत्रो एवं विभिन्न समयावधि में प्रजनन सम्बन्धी चिकित्सा जनित अभिलेखो के आधार पर लिंगानुपात असन्तुलन के कारणो का आकलन करने का प्रयास किया । व्ही पी देसाई ;1967द्ध एवं एम के जैन ;1976 द्धने भारतीय जनसंख्या में लिंगानुपात असन्तुलन के स्पष्टीकरण हेतु स्त्री –पुरूष जन्म दर की विवेचना की और अपने अध्ययन में पाया कि स्त्री–पुरूष जन्म दर में कोई उल्लेखन्नीय अन्तर नही है जिसके अधार पर इस अन्तर को भारतीय जनसंख्या मे ह्रासमान लिंगानुपात हेतु उत्तरदायी कहा जा सके । डा दिवाकर राजपुत ;2007 द्धने लिंगानुपात असन्तुलन व उसके दुष्परिणामो को विश्लेषित किया । उन्होने अपने शोध अध्ययन में स्त्री–पुरूष के जनसंख्यात्मक असन्तुलन से उत्पन्न विभिन्न सामाजिक –सांस्कृतिक समस्याओं एवं दुष्परिणामो की चर्चा की है । उन्होंने अपने अध्ययन में बताया कि लडकियो के निरन्तर कमी होने के कारण महिलाओं के विरूद्ध अपराध ,यौन शोषण, व्यभिचार और विवाह सम्बन्धी समस्याया, पारिवारिक विधटन, महिला उत्पीडन व पुरूषो की विवाह की समस्या बढ रही है । इससे बहुपति विचाह, बलात विवाह व वेश्यावृत्ति जैसी समस्या पैदा हो रही है ।

अध्ययन का उदेश्य एवं उपकल्पना

उक्त सन्दर्भ में प्रस्तुत अध्ययन में लिंगानुपात असन्तुलन के सामाजिक –सांस्कृतिक पक्षो को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है । हमारा यह अध्ययन इस मान्यता पर आधारित है कि लिगानुपात असन्तुलन का मुख्य कारण लिंग परीक्षण व भ्रूण हत्या है और यह कुकृत्य आर्थिक रूप से सम्पन्न व भौतिक वादी दृष्टिकोण वाले जादा करते है।

अध्ययन क्षेत्र एवं अध्ययन विधि

लिंगानुपात असन्तुलन के सामाजिक –सांस्कृतिक आयाम से सम्बन्धित यह प्रपत्र मेरे द्वारा किये गये एक शोध अध्ययन पर आधारित है जो ग्वालियर नगर की पाश कालोनी दीनदयाल नगर में सम्पादित किया गया । दीनदयाल नगर के विभिन्न सेक्टरो में निवासरत कुल परिवारो की संख्या ज्ञात कर कुल 140 परिवारो का चयन दैव निदर्शन विधि के द्वारा किया गया । इनका चयन करते समय इस बाता का ध्यान रखा गया कि वे समग्र का प्रतिनिधित्व करने वाले हो । अध्ययन की इकाई परिवार की महिला मुखिया को माना गया । तथ्यो का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया । साक्षात्कार अनुसूची में लिंगानुपात असन्तुलन के विभिन्न कारको से सम्बन्धित प्रश्नो को समावेशित किया गया और उत्तरदाताओ की प्रतिक्रिया जानी गयी । अनुसन्धान कार्य में अवलोकन विधि का भी उपयोग किया गया और सूचनादाताओ के व्यवहार विचार और मनोवृत्ति व अनुभवो के बारे जानकारी प्राप्त की गयी ।

उत्तरदाताओ की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का निर्धारण

प्रस्तुत अध्ययन की मुख्य समस्या उत्तरदाताओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति के निर्धारण की थी और बिना किसी मापन के ये जानना सम्भव नही था कि महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर किस रूप में पाया जाता है और इसके उचा या नीचा होने से उनके सामाजिक आर्थिक विशेषताओं पर क्या प्रभाव पडता है । इसको जानने के लिये एक विशेष प्रकार के प्रश्न समूह का निर्माण किया गया और उससे सम्बन्धित तथ्यों के लिये गुणात्मक मूल्य प्रदान किया गया । कथनो को तीन श्रेणियो–सहमत असहमत और तटस्थ मे विभक्त किया गया । प्रश्न समूह में कुल 12 प्रश्न रखे गये जिसमें प्रत्येक उत्तरदाता को न्यूनतम 12 और अधिकतम 36 अंक प्राप्त हो सकते थें । इन प्राप्तांको से सबसे पहले समान्तर माध्य और मानक विचलन निकाला गया । माध्य और मानक विचलन को एक बार जोडा और एक बार घटाया गया । इस प्रकार कुल प्राप्तांको के लिये निचली और उपरी दो सीमाये प्राप्त हो गयी । इस प्रकार 12–21 अंक प्राप्त करने वाली उत्तर दाताओ को निम्न श्रेणी मे 22–31 अंक प्राप्त करने वाली उत्तरदाताओ को मध्यम श्रेणी में और 32–36 अंक प्राप्त करने वाली उत्तर दाताओं को उच्च श्रेणी में रखा गया । प्राप्तांको का वितरण निम्न सारणी में रखा जा रहा है–

सारणी –1 प्राप्तांको का वितरण

प्राप्तांक	संख्या	प्रतिशत	स्तर
12–21	33	24	निम्न
22–32	63	45	मध्यम
32–36	44	31	उच्च
योग	140	100	–

न्यूनतम प्राप्तांक –12 अधिकतम प्राप्तांक –36 समान्तर माध्य –26.77
मानक विचलन – 6.25 निम्न सीमा – 20.52 उच्च सीमा –35.02

उक्त सारणी में प्राप्त तथ्य यह स्पष्ट करते है कि कुल उत्तरदाताओ का 24 प्रतिशत भाग निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर का 45 प्रतिशत मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर का और 31 प्रतिशत भाग उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर का है। उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर मे हमने उन उत्तरदाताओं को रखा जो लडकियों की शिक्षा दीक्षा व्यवसाय व कैरियर के प्रति अधिक जागरूक और लडकियो को लडको से कम न आकने के प्रति सर्वाधिक उदार थी । निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर के अर्न्तगत उन उत्तरदाताओ को रखा जो लडकियो के प्रति परम्परागत दृष्टिकोण रखने वाली थी और लडकियों की शिक्षा दीक्षा, जागरूकता और लडको के समान समानता और नियन्त्रण के प्रति कम उदार थी । तटस्थ श्रेणी मे उन उत्तरदाताओ को रखा गया जो लडकियो के प्रति न तो बहुत अधिक उदार थी और न ही अनुदार । ये दोनो के मध्य स्थित है ।

भ्रूण परीक्षण की आवश्यकता

आरम्भ में महिलाओं को प्रसव के दौरान अनेक समस्याओं का सामना करना पडता था । प्रसव के दौरान अनजानी जटिलताओं के कारण मॉ और बच्चे दोनो को जान का खतरा बना रहता था । कभी कभी मॉ और बच्चा दोनो से हाथ घोना पडता था । पर आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने ऐसी सुबिधाये उपलब्ध करा दी की प्रसव के दौरान अनजानी जटिलताओं से मुक्ति मिल सके । इन सुविधाओं में अल्ट्रासोनोग्राफी, एम्नियोसेन्टेसि, कोरियोनिक विल्स विधि, प्री इम्पलान्टेंशन स्टेज डायग्नोसिस, सेकेन्ड पोलर बाडी टेस्ट, थ्री–डी इकोग्राम, आदि प्रणालियों द्वारा विभिन्न बीमारियों को गर्भावस्था में पहचान कर ठीक किया जा सकता है और एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया जा सकता है।

उक्त सन्दर्भ में उत्तरदाताओं से यह पुछा गया कि आप की दृष्टि में गर्भस्थ शिशु का परीक्षण की आवश्यकता है। प्राप्त उत्तरो को हम निम्न सारणी में रख रहे है–

सारणी – 2 भ्रूण परीक्षण की आवश्यकता सम्बन्धी दृष्टिकोण

सामाजिक आर्थिक स्तर	हॉ %	नही %	तटस्थ %	योग %
निम्न स्तर	15 45.5	16 48.5	2 6.0	33 100.0
मध्यम स्तर	41 65.1	18 28.6	4 6.3	63 100.0
उच्च स्तर	35 79.5	07 15.9	2 4.6	44 100.0
योग	91 65.0	41 29.3	08 5.7	140 100.0

X2=10.307, df=4,Table value= 9.488 P= .05

उक्त सारणी में प्राप्त तथ्य यह स्पष्ट करते है कि हमारे आधे से अधिक उत्तरदाता 65 प्रतिशत भ्रूण परीक्षण की आवश्यकता पर बल देती है। उनकी दृष्टि में गर्भस्थ शिशु का परीक्षण करा लेने से समय रहते विकारग्रस्त शिशु का पता लगाया जा सकता है और उसका उपचार भी किया जा सकता है। यदि माता पिता मे कोई दोषपूर्ण जीन हो तो इस तकनीक का सहारा लिया जाना चाहिये नही तो विकलांग शिशु की समस्या बन सकती है। इसमे मध्यम और उच्च स्तर की उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक है। पर एक चौथाई उत्तरदाता इससे सहमत नही है । उनकी दृष्टि में ऐसे परीक्षण का कुछ लोग दुरूपयोग कर रहे है। इस उत्तम विधि को लिंग परीक्षण का माध्यम बना लिया गया है। बहुत कम लोग ऐसे है जो शिशु के विकास या विकृति को जानने के लिये इसका प्रयोग करते है । इसमें निम्न स्तर वाली उत्तरदाताओं की संख्या सर्वाधिक है। शेष 5.7 प्रतिशत उत्तरदाता कुछ भी कहने की स्थिति में नही है .

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में भ्रूण परीक्षण की आवश्यकता समाज में उपयोगी थी, पर उसका दुरूपयोग होने के कारण इसको गैर कानूनी घोषित कर दिया गया । फिर भी चोरी छिपे लोग भ्रूण परीक्षण करा रहे है।

यहा काई वर्ग का परीक्षण किया गया और पाया गया की दोना चरो में सकारात्मक सम्बन्ध है। यहां काई वर्ग का मान 10.307 आया जो सारणी मान 9.488 से कम है तथा .05 सम्भाव्यता स्तर पर सार्थक है।

भ्रूण परीक्षण के लिये प्रेरक तत्व

भ्रूण परीक्षण की आवश्यकता पर सूचनादाताओं के दृष्टिकोण जान लेने के बाद उनसे यह जानने का प्रयास किया गया कि उन्हे भ्रूण परीक्षण कराने की प्रेरणा कहां से मिली । उनसे यह पुछा गया कि यदि भ्रूण परीक्षण कराना आवश्यक ही है तो उन्हे भ्रूण परीक्षण कराने को प्रेरित कौन करता है। प्राप्त उत्तरो को हम निम्न सारणी में रख रहे है–

सारणी–3 भ्रूण परीक्षण कराने के लिये प्रेरित करने वाले तत्व

सामाजिक–आथिक स्तर	पति की इच्छा	%	पत्नी की इच्छा	%	परिवार की इच्छा	%	योग	%
निम्न स्तर	26	78.8	01	3.0	06	18.2	33	100
मध्यम स्तर	57	90.5	01	1.6	05	7.9	63	100
उच्च स्तर	41	93.2	––	––	03	6.8	44	100
योग	124	88.6	02	1.4	14	10.0	140	100

x^2=4.652 df=4 Table value=9.488 P=.05

उक्त सारणी में प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भ्रूण परीक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले उत्तरदाताओं में ऐसे लोगो की संख्या अधिक थी जो उच्च मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर वाले शिक्षित वर्ग के लोग है । सूचनादाताओं से बातचीत के दौरान यह पता चला कि उच्च शिक्षा प्राप्त एवं उच्च मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर वाले लोग ही भ्रूण परीक्षण कराने के पक्ष में है । अशिक्षित एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले उत्तर दाताओं को इस प्रकार के परीक्षण की बहुत अधिक जानकारी नही है। यदि उक्त आंकडो का सांख्यकीय विश्लेषण करे तो हम पाते है कि 88.6 प्रतिशत उत्तरदाता मानती है कि भ्रूण परीक्षण हेतु उनके पति द्वारा उनको प्रेरित किया जाता है। उनके द्वारा यह बताया गया कि उनके पति की इच्छा थी कि भ्रूण परीक्षण करा कर गर्भस्थ शिशु की जानकारी ली जाय । इसमें तीनो वर्ग की उत्तरदाताये सम्मलित है। 10 प्रतिशत उत्तरदाता मानती है कि उनके परिवार के अन्य सदस्य जिसमे सास श्वसुर सम्मलित है, वे परीक्षण कराने के लिये प्रेरित करते है। स्वयं की इच्छा से परीक्षण कराने वाली उत्तरदाताओं की संख्या न्यूनतम है ।

यहां पर भी काई वर्ग का परीक्षण किया गया और पाया कि उत्तरदाताओ की सामाजिक आर्थिक स्तर और प्रेरित करने वाले तत्वो के बीच सम्बन्ध सार्थक नही है। यहां पर काई वर्ग है। ये दोना चर स्वतन्त्र है और इनके बीच किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नही है।

भ्रूण परीक्षण कराने का मुख्य कारण

वर्तमान भारतीय समाज परिवर्तनशीलता की स्थिति में है। समाज का कोई ऐसा पक्ष नही है जो परिवर्तन से बचा हो । परिवर्तन के इन कारको में औद्योगीकरण, नगरीकरीण, आर्थिक व्यावसायिक गतिशीलता, आधुनिक शिक्षा, ग्रामीण नगरीय प्रर्वजन व प्रौद्योगिकी विकास मुख्य है। इन कारको ने भारतीया समाज की संरचनात्मक– प्रकार्यात्मक दोनो पक्षो को प्रभावित किया है। इससे समाज की समृद्धि के साथ साथ मानवीय प्रसन्नता में भी वृद्धि हुई है। पर वास्तविकता यह है कि जैसे जैसे हमारा समाज प्राद्योगिकी की ओर बढ रहा है वैसे वैसे ही हमारा सामाजिक व पारिवारिक जीवन विषाक्त होता जा रहा है। इस प्रद्यौगिकी ने जहां विकास के नये आयाम दिये वही समाज में गम्भीर समस्याओं को भी पैदा किया । इन समस्याओं में लिंगानुपात असन्तुलन मुख्य है जो भ्रूण परीक्षण की विधि के विकसित होने से पैदा हुई ।इस सन्दर्भ मे उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि आप के दृष्टि में भ्रूण परीक्षण कराने के क्या कारण हो सकते है। उनके सामने कुछ विकल्प रखे गये और उन पर उनकी प्रतिक्रिया जानी गयी । प्राप्त प्रतिक्रियाओं को निम्न सारणी में रखा जा रहा है–

सारणी–4 भ्रूण परीक्षण कराने का कारण

स्तर	शिशु का विकस %		लडका या लडकी जानना %		अस्वस्थ होने पर %		सीमित परिवार %		अन्य %		याग %	
निम्न स्तर	15	45.4	05	15.1	01	3.0	06	18.1	06	18.1	33	100
मध्यम स्तर	31	49.2	25	39.7	03	4.8	01	1.6	03	4.8	63	100
उच्च स्तर	25	56.8	15	34.1	––	––	04	9.1	––	––	44	100
योग	71	50.7	45	32.1	04	2.9	11	7.9	09	4.6	140	100

;इनमे उन उत्तरदाताओ को भी सम्मलित कर लिया गया जो भ्रूण परीक्षण कराने की आवश्यकता को नही मानती। द्ध

उक्त सारणी में प्राप्त तथ्य यह स्पष्ट करते है कि शिशु का शारीरिक व मानसिक विकास ठीक ढंग से हो सके और उसमें किसी प्रकार का शारीरिक व मानसिक विकार उत्पन्न न हो , इसलिये भ्रूण परीक्षण की आवश्यकता है। ऐसा मानने वालो में हमारी आधी से अधिक उत्तरदाताये है जिनमें हर वर्ग की उत्तरदाता सम्मलित है जो भ्रूण परीक्षण कराने के समर्थन करती है । हमारी 32.1 प्रतिशत उत्तरदाताओ का मानना है कि भ्रूण परीक्षण शिशु का लिंग जाचने के लिये कराया जाता है। इन उत्तरदाताओं का मानना है कि पुत्र प्राप्ति की लालसा हमारे समाज को इस तरह से अन्धा कर रखा है कि पुत्र के लिये हर सम्भव उपाय अपनाने का प्रयास किया जाता है। ऐसा मानने वालो में मध्यम और उच्च स्तर की उत्तरदाताये सर्वाधिक है। हमारे 7.9 प्रतिशत उत्तरदाता परिवार को सीमित रखना चाहता है। इनका मानना है कि परिवार में लडकियां ही लडकिया पैदा हो रही है तो भ्रूण परीक्षण करा कर परिवार को सीमित किया जा सकता है। चिकित्सा विज्ञान ने ऐसे दम्पतियो के लिये द्वार खोल दिये । सीमित परिवार आज समय की मांग है और लडका बुढापे का सहारा । यही मानसिकता भ्रूण परीक्षण के लिये प्रेरित करता है। ऐसा मानने वालो में निम्न और उच्च स्तर की महिलाये सर्वाधिक है। हमारे उत्तरदाताओं का एक न्यूनतम भाग 2.9 प्रतिशत यह मानता है कि गर्भावस्था के दौरान अस्वस्थ होने के कारण महिलाये भ्रूण परीक्षण कराती है। उत्तरदाताओ के अनुसार चिकित्सा परामर्श के पश्चात भिन्न भिन्न बीमारियों जैसे गर्भ में बच्चे का न घुमना, असमय पेट में दर्द, असमय खून आना, चक्कर आना, रक्त चाप का घटना बढना, आदि से अल्ट्रासाउण्ड कराया जा रहा है। यदि उपयुक्त चिकित्सकीय परामर्श न दिया जाय तो गर्भवती महिला को खतरा हो सकता है। हमारी 4.6 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य कारणो से भ्रूण परीक्षण की हिमायती है । अन्य कारणो में जुडवा बच्चा होने की स्थिति में, गर्भवती महिला को 9 माह का समय निकल जाने, बार बार रक्तस्राव होने से चिकित्सकीय सलाह के उपरान्त भ्रूण परीक्षण कराया जा सकता है।

लिंग परीक्षण एवं भ्रूण हत्या के प्रति उत्तरदाताओ का दृष्टिकोण

आज हम 21 वी सदी में प्रवेश कर चुके है, फिर भी हमारे समाज की मानसिकता नही बदली। आज भी हमारा समाज लडका लडकी में भेद करता है। अल्ट्रासाउण्ड और लिंग परीक्षण की अन्य विधियो के कारण पुत्र प्राप्ति की इच्छा बलवती हुई और पुत्र प्राप्ति के चक्कर मे बेटियों की संख्या बढती चले जाने की पुरानी बीमारी से लोग राहत महसूस कर रहे है। आश्चर्य की बात है कि पैर से दब कर चीटी मर जाने पर नाक भौ सिकुडने वाले लोग इस तरह की हत्या पर उफ न करते । लडको की तुलना में लडकियो की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है । भ्रूण हत्या का रिवाज तथाकथित सम्भ्रान्त व सम्पन्न परिवारो मे अधिक चलरहा है । भ्रूण परीक्षण व भ्रूण हत्या पर वैधानिक प्रतिबन्ध लगाने के बावजूद भी शिशु के स्वास्थ जाचने के नाम पर बेंधडक भ्रूण परीक्षण कर कानून का मुह चिढाया जा रहा है।

उक्त सन्दर्भ में यहा महिलाओ से लिंग परीक्षण एवं कन्या भ्रूण हत्या से जुडे विभिन्न विन्दुओ पर उनकी राय जानी गयी । उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि लिंग परीक्षण पर वैधानिक प्रतिबन्ध लगाया गया है, क्या आप इससे सहमत है? प्राप्त उत्तरो को हम निम्न सारणी में रख रहे है–

सारणी–5 लिंग परीक्षण पर प्रतिबन्ध के प्रति दृष्टिकोण

स्तर	प्रतिबन्ध अनिवार्य है %	प्रतिबन्ध अनिवार्य नही %	योग %
निम्न स्तर	23 69.7	10 30.3	33 100.0
मध्यम स्तर	43 68.3	20 31.7	63 100.0
उच्च स्तर	25 56.8	19 43.2	44 100.0
योग	91 65.0	49 35.0	140 100.0

x^2=1.796 df=2 TableValue=5.991 P=.05

उक्त सारणी में प्राप्त तथ्य यह स्पष्ट करते है कि हमारी दो तिहाई अर्थात 65 प्रतिशत उत्तरदाता यह चाहती है कि लिंग परीक्षण पर बैधानिक प्रतिबन्ध अनिवार्य होना चाहिये । ये महिलाये लिंग परीक्षण पर प्रतिबन्ध को उचित मानती है, पर केवल बैधानिक प्रतिबन्ध होने से इस समस्या का निदान नही हो सकता जब तक समाज की स्वीकृति न हो । यदि आप वैधानिक प्रतिबन्ध लगायेगे तो लाग चोरी छिपे भ्रूण की जांच करायेगे । इसलिये कानून के साथ साथ समाज की स्वीकृति अनिवार्य है। ऐसा मानने वालो में सभी वर्ग की महिलाये सम्मलित है पर निम्न–मध्यम वर्ग की संख्या सर्वाधिक है । इसके बिपरीत 35 प्रतिशत उत्तरदाता भ्रूण परीक्षण पर लगाये गये प्रतिबन्ध को उचित नही मानती । इन महिलाओ का मानना है कि चिकित्सा विज्ञान ने जब ये सुबिधा उपलब्ध करा दिया तो हम अपने स्वास्थ के प्रति गम्भीर क्यो न हो? यदि शिशु का विकास ठीक ढंग से न हो पर रहा हो या मॉ का स्वास्थ ठीक न हो तो भूण परीक्षण कराकर स्वास्थ लाभ लिया जाना चाहिये ताकि गर्भस्थ शिशु अपंग न हो, उसमे किसी प्रकार की शारीरिक या मानसिक विकार न हो । इसलिये भ्रूण परीक्षण पर लगाया गया प्रतिबन्ध समाप्त किया जाना चाहिये । यह वैधानिक रूप से उचित नही है बल्कि हमारे उपर थोपा गया जबरिया कानून है।

लिंग परीक्षण पर लगाये गये कानूनी प्रतिबबन्घो की अनिवार्यता के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण जानने के बाद यह जानने का प्रयास किया गया कि लिगं परीक्षण कब कराया जाना चाहिये –प्रथम सन्तान पुत्र के बाद या प्रथम सन्तान पुत्री के बाद । प्राप्त तथ्यो को निम्न सारणी मे रखा जा रहा है

सारणी–'6 सन्तान प्राप्ति के बाद लिंग परीक्षण

विकल्प	सहमत %	असहमत %	योग %
प्रथम सन्तान पुत्र प्राप्ति के बाद	25 17.9	115 82.1	140 100
प्रथम सन्तान पुत्री प्राप्ति के बाद	71 50.9	69 49.3	140 100
भ्रूण परीक्षण कराना कानूनी अपराध है	116 82.9	24 17.1	140 100

उक्त सारणी में दिये गये विकल्पो पर उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया जानी गयी । उत्तरदाताओ का 17.9 प्रतिशत भाग मानता है कि प्रथम सन्तान पुत्र प्राप्ति के बाद भ्रूण परीक्षण करा लिया जाना चाहिये । सीमित परिवार को बनाये रखने और जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाने के लिये ऐसा किया जाना उचित होगा पर सर्वाधिक 82.1 प्रतिशत उत्तरदाता इससे असहमत है और लगभग इतनी ही संख्या में ये भ्रूण परीक्षण कराना कानूनी अपराध मानती है । दुसरे विकल्प में हमारा आधी से अधिक उत्तर दाता प्रथम सन्तान पुत्री के बाद भ्रूण परीक्षण कराना उचित मानती है। इनका मानना है कि प्रथम सन्तान यदि कन्या है तो परिवार कल्याण की दृष्टि से भ्रूण परीक्षण कराना उचित होगा पर आधी उत्तरदाता इससे भी सहमत नही है ।

सन्तान प्राप्ति कें बाद भ्रूण परीक्षण सम्बन्धी विचारो का विश्लेषण करने के उपरान्त यह जानने का प्रयास किया गया कि यदि भ्रूण परीक्षण के उपरान्त यह पता चलता है कि गर्भस्थ शिशु कन्या भ्रूण है तो क्या भ्रूण नष्ट कराया जाय उत्तरदाताओ से यह पुछा गया कि यदि पता चल जाय कि गर्भस्थ शिशु कन्या है तो क्या कन्या भ्रूण को नष्ट करायेगी ? प्राप्त उत्तर को निम्न सारणी मे रखा जा रहा है–

सारणी–7 कन्या भ्रूण को नष्ट कराने से सम्बन्धी विचार

स्तर	हॉ %	नहीं %	योग %
निम्न स्तर	04 12.1	29 87.9	33 100.0
मध्यम स्तर	07 11.1	56 88.9	63 100.0
उच्च स्तर	31 70.4	13 29.5	44 100.0

योग	43 30.7	97 69.3	140 100.0

x^2=49.567 df=4 TableValue=9.488 P=.05

उक्त सारणी में प्राप्त तथ्यो के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि हमारे आधे से अधिक उत्तरदाता 69.3 प्रतिशत यह मानती है कि भ्रूण परीक्षण के उपरान्त भी यदि पता चलता है कि गर्भस्थ शिशु कन्या है तो भी भ्रूण नष्ट नही करायेगी । ऐसा मानने वालो मे निम्न मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर के उत्तरदाता सर्वाधिक है जब कि 30.7 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानती है कि भ्रूण नष्ट करायेगी यदि गर्भस्थ शिशु लडकी है । ऐसा मानने वालो में उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर की उत्तरदाताये सर्वाधिक है। इन महिलाओं का मानना है कि वंश परम्परा का निर्वहन करने ,पूर्वजो को श्रद्धान्जली देने,परिवार का व्यवसाय संचालित करने के लिये पुत्र का होना आवश्यक है। यह कार्य भारतीय परम्परा में पुत्र का है पुत्री का नही । इस लिये परिवार में पुत्र होना चाहिये न कि पुत्री ।

कन्या भ्रूण हत्या के कारण

भारत में लडकियो की उपेक्षा के पीछे संकुचित मानसिकता है और यही संकुचित मानसिकता कन्या भ्रूण हत्या को जन्म देती है जिससे लिंगानुपात असन्तुलित हुआ है । सन् ;2011द्ध की आकडे चौकाने वाले है । जहां वर्ष ; 2001द्ध में प्रति हजार पुरूषो पर महिलाओं की संख्या 933 थी वही ;2011द्ध में बढकर 940 हो गयी । इसका मुख्य कारण यह है कि बीते दशको में भूण हत्याओं में तीब्रगति से वृद्धि हुई । साथ ही दहेज का बढता प्रचलन, शादियो में अधिक खर्चा, पुत्र मोह वंश चलाने के लिये, लडकियों की पढाई अनिवार्य न होना, लडकियो का शारीरिक रूप से असुरक्षित होना, विवाह के लिये योग्य वर का न मिलना, जनसंख्या नियन्त्रण आदि मुख्य रूप से उत्तरदायी ठहराये जा सकते है। वैज्ञानिक पद्धतियो के बढते प्रचलन से लोगो को भ्रूण हत्या कराने में काफी मदद मिली है ।

उक्त सन्दर्भ मे उत्तरदाताओं से यह जानने का प्रयास किया गया कि कन्या भ्रूण हत्या का मुख्य कारण उनकी दृष्टि मे क्या है? उनके सम्मुख कन्या भ्रूण हत्या के कारणो सम्बन्धी कुछ विकल्प रखे गये और उन पर उनकी प्रतिक्रिया जानी गयी । प्राप्त प्रतिक्रियाओ को निम्न सारणी में रखा जा रहा है–

सारणी–8 कन्या भ्रूण हत्या के कारण सम्बन्धी दृष्टिकोण

कन्या भ्रूण हत्या के कारण	संख्या	प्रतिशत
पुत्र प्राप्ति की मानसिकता कन्या भ्रूण हत्या को प्रोत्साहित करता है	74	52.8
कन्या भ्रूण हत्या से विवाह की परेशानी से बचा जा सकता है	10	7.1
लडकी परिवार पर एक अनार्थिक भार है	21	15
प्राचीन मनोवृत्तियां व अन्धविश्वास कन्या भ्रूण हत्या के लिये उत्तरदायी है	11	7.8
अशिक्षा व उपेक्षा कन्या भ्रूण हत्या का कारण है	24	17.1
योग	140	100

उक्त सारणी में प्राप्त तथ्य यह स्पष्ट करते है कि कन्या भ्रूण हत्या के एक नही अनेक कारण है । उनमें सबसे मुख्य कारण पुत्र प्राप्ति की मानसिकता है। हमारे आधे से अधिक उत्तरदाताओं ने बाताया कि हमारे समाज में पुत्र को ही अधिक महत्ता दी गयी है क्योकि पुत्र को ही वंश परम्परा को बढाने वाला , अन्तिम संस्कार कर माता पिता को मुक्त कराने वाला, परिवार का भरण पोषण करने वाला और भविष्य का सहारा माना जाता है। इस लिये लडके की चाह मुखर हो जाती है तथा कन्या भ्रूण हत्या का प्रचलन बढने लगा । हमारे 15 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानती है कि लडकियां परिवार के लिये आवांक्षित आर्थिक भार है क्योकि विवाह के योग्य होने पर दहेज के रूप में काफी धन व्यय करना पडता है । दहेज प्रथा से बधु पक्ष की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हो जाती है । इन उत्तरदाताओ ने बताया कि लडकी का जन्म खान–पान की व्यवस्था, पढाई के बाद योग्य वर की तलाश, और ढेर सारा दहेज लडकी को परिवार मे एक भार बना देता है । इन्ही सारी परेशानियो के कारण परिवार में बालिका का जन्म अपने यहा नही चाहते । हमारी 17.1 प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षा व सामाजिक परिवेश को कन्या भ्रूण हत्या का कारण मानती है। इन उत्तरदाताओ का मानना है कि हमारा सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश ही ऐसा है कि महिलाओ को अपने तथा अपनी सन्तान सम्बन्धी महत्वपूर्ण निर्णय लेने से वंचित रखा जाता है ।इन्ही पूर्वधारणाओं के महमारी 7.8 प्रतिशत उत्तरदाता प्राचीन मनोवृत्तियों और अन्धविश्वास को कन्या भ्रूण हत्या का कारण मानता है। इन उत्तर दाताओ का मानना है कि जिन दम्पतियो के पास केवल लडकियां ही लडकिया है, पुत्र नही है उनको समाज अजीबो गरीब दृष्टि से देखता है। समाज में अन्धविश्वास और प्रचलित मनोवृत्तियां इतनी गहरी हो गयी है कि पुत्र ही सब कुछ है । इस कारण कन्या भ्रूण हत्या हो रही है । इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पुत्र प्राप्ति की मानसिकता, अशिक्षा व सामाजिक उपेक्षा, निर्धनता और दहेज, पुरूष प्रधान मानसिकता व अन्धविश्वास कन्याभ्रूण हत्या का मुख्य कारण है । इसी प्रकार के निष्कर्ष अलका जैन 2014, गिरीश मोहन दूबे और सुनीता जैन (2014), डा नीता गुप्ता (2013), डा अरूण कुमार उपाध्याय (2007) ने अपने अध्ययनो में दिये है ।

कन्या भ्रूण हत्या के सामाजिक दुष्परिणाम

आंकडे इस बात के साक्षी है कि देश में बालिका शिशु हत्या व्यापक स्तर पर हो रही है– चाहे जन्म से पहले का हो या जन्म के बाद । वर्ष (2001) की जनगणना के अनुसार भारत में बाललिंगानुपात 927 था जो (2011) में घट कर 914 रह गया । राज्य स्तर पर देखे तो हम पाते है कि छत्तीसगढ में (2001) मे 1000 बालको पर 975 बालिकायें थी जो (2011) में घट कर 964 पर पहुच गया । मेघालय, त्रिपुरा, असम, नागालैण्ड,

अरूणांचल प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, केरल, उडीसा, कर्नाटक, बिहार, जम्मू काश्मीर, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तराखण्ड, में (2001) की तुलना में (2011) में गिरावट आयी है। पर मिजोरम, तमिलनाडू, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, पंजाब में बाल लिंगानुपात में वृद्धि के संकेत मिलते है पर यह कोई उल्लेखन्नीय प्रगति नही है क्योकि इन राज्यों मे लिंगानुपात अभी भी बहुत कम है । अण्डमान निकोबार और चण्डीगढ को छोड कर सभी केन्द्र शासित प्रदेशो में लिंगानुपात में कमी हो रही है। इस प्रकार ये आंकडे अत्यन्त चिन्ताजनक है जो महिला प्रस्थिति के निर्धारण के अच्छे संकेत नही है ।

बालिका भ्रूण हत्या से लिंगानुपात असन्तुलन चिन्ताजनक स्थिति में है। लडकियो के निरन्तर कमी होने से महिलाओं के विरूद्ध अपराध, यौन शोषण, महिला उत्पीडन, विवाह सम्बन्धी समस्या, निरन्तर बढ रही है । इससे बहुपति विवाह, बलात विवाह, एवं वेश्यावृत्ति जैसी समस्या भी पैदा हो रही है। हमारा सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश भी इसी प्रकार का रहा जिसमे महिलाओं को अपनी तथा अपनी सन्तान के प्रति महत्वपूर्ण निर्णय लेने से वंचित रखा जाता है। इन्ही कन्या विरोधी धारणाओ का परिणाम कन्या भ्रूण हत्या जेसी घिनोनी कृत्य के रूप में हमारे सामने आता है। महिला सशक्तिककरण के इस दौर में लिंग परीक्षण एवं कन्या भ्रूण हत्या जैसी समस्या हमारे समाज के लिये एक महत्व पूर्ण चुनौती है।

निष्कर्षत हम कह सकते है कि लिंगानुपात असन्तुलन का मुख्य कारण लिंग परीक्षण एवं कन्या भ्रूण हत्या है और यह कुकृत्य अधिकाशत सुशिक्षित, आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और भौतिकवादी दृष्टिकोण वाले ही जादा करा रहे है । कठोर कानूनी प्रवधानो के वावजूद भी इस प्रकार के लिंग परीक्षण होना हमारे समाज के लिये कलंक है । इसके लिये आवश्यक है कि जनजागरण द्वारा जागरूकता पैदा किया जाय। सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक कुप्रथाओ का अन्त, महिला शिक्षा का विस्तार,और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन दे कर लिंगानुपात असन्तुलन को कम किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *के. एन. दास एण्ड पी. सी. महलनोविस 1934, ए प्रीलेमनरी नोट आन द रेट आफ मैटरनल डेथ एण्ड स्टील बर्थ इन कलकत्ता, द इण्डियन जनरल आफ स्टेटिस्टकस, वायल्युम 1 पार्ट 2 एण्ड 3 ।*
2. *के. बी. रामचन्द्रन एण्ड व्ही. ए. देश पाण्डे 1964, द सेक्स रेशियो एट बर्थ इन इण्डिया बाई रिजनस, मिलबैक मेमारियल फण्ड, क्वार्टली ।*
3. *मालनी कारकर एण्ड सुलमा चोगले 1976, आन द डिटरमेन्टस आफ सेक्स आफ ए चाइल्ड विथिन ए फैमिली, जोगिन्दर कुमार एण्ड टी. के. राव, एडिटेडस, सेक्स रेशियो डेमोग्रफिक एनालसिस, बाम्बे इण्टरनेशनल इन्सीटीटयूट फार पापुलेशन स्टडीज, डोनार ।*
4. *पी. वी. देसाई 1967, साइज एण्ड सेक्स कम्पोजीशन आफ पापुलेशन आफ इण्डिया, 1901–1961 नयी दिल्ली, एशिया पब्लिशिंग हाउस ।*
5. *एम. के. जैन 1976 डिसिलिंग प्रोपोरेशन आफ फैमिलिज इन इण्डिया इटस एक्सटेन्ट एण्ड अन्डरलाइग फैक्टरस इन कारकाल जोगिन्दर राव ,एडिटेड सेक्स रेशियो डेमोग्राफिक एनालसिस, बाम्बे इण्टरनेशनल इन्सटीटयुट आफ पापुलेशन स्टडीज, डोनार ।*
6. *ईन्द्रा चौहान 1986 सामाजिक शोध में प्राथमिकताये, सामाजिकी उत्तर प्रदेश समाज शास्त्र परिषद, खण्ड 7 अंक 1–2*
7. *बरेली जिला रायसेन में दिया गया उदबोधन ।*
8. *अलका जैन 2014 भारत में ब्रिगानुपात संरचना का अध्ययन, म.प्र. इकोनामिक एसोसियेंशन फरवरी, इन्दौर ।*
9. *गिरीश मोहन दूबे एवं सुनीता जैन 2014 भारत में लिंगानुपात की स्थिति का विश्लेषण, जर्नल आफ इकानामिक एसोसियेंशन, फरवरी इन्दौर ।*
10. *नीता गुप्ता 2013, कन्या भ्रूण हत्या के दुष्परिणाम, शोध अनुसन्धान समाचार, भोपाल।*